06/08/2022

Set-A

Your Roll No .....

Sr. No. of Question Paper : 5243
Unique Paper Code : 12051601
Name of the Paper : हिंदी आलोचना
Name of the Course : **BA (H) HINDI – CBCS**
Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश :

1. इसप्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपरदिए गएनिर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए.
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं.

1- निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या करें (10x3)

(क) लोक में फैली दुःख की छाया को हटाने में ब्रह्म की आनंद कला, जो शक्तिमय रूप धारण करती है उसकी भीषणता मे भी अद्भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है. विरुद्धों का यही सामंजस्य कर्मक्षेत्र का सौन्दर्य है जिसकी ओरआकर्षित हुए बिना मनुष्य का ह्रदय नहीं रह सकता. इससामंजस्य का औरकईरूपों में भी दर्शन होता है.किसी कोट पतलून हैटवाले को धाराप्रवाह संस्कृत बोलते अथवा किसी पंडित वेशधारी सज्जन को अंग्रेजी की प्रगल्भ वक्तृता देते सुन व्यक्तित्व का जो चमत्कार सा दिखाई पड़ता है उसकी तह में भी सामंजस्य का यही सौन्दर्य समझना चाहिए. भीषणता औरसरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता ओरमधुरता, प्रचंडता औरमधुरता का सामंजस्य ही लोकधर्म का सौन्दर्य है. आदिकवि वाल्मीकि की वाणी इसी सौन्दर्य के उद्घाटन महोत्सव का दिव्य संगीत है.

अथवा

इसमानवतावाद के दो प्रधान लक्षण हैं – (1)मनुष्य की महिमा औरमानवीय मूल्यों में विश्वास तथा (2) मनुष्य के मर्त्य जीवन को किसी प्रकार के पाप फलभोगने का परिणाम न समझकरइसे इसी दुनिया में सुख-समृद्धि से युक्त करना. यह दूसरी बात उनसब पुरानी वैरागी मनोभावनाओं का प्रत्याख्यान करती है जो शरीर को नाना कृच्छाचारों से तापित करके किसी अनंत शाश्वत सुख की ओरमनुष्य को प्रवृत करती है औरइसजीवन का सम्पूर्ण रूप से उपभोग करने की प्रवृति को प्रश्रय देती है. परन्तु पहली भावना इसपर अंकुश का काम करती है, क्योंकि वह

मनुष्य द्वारा उद्भावित पशु सामान्य धरातल से उपरले स्तर के मानसिक संयम, बौद्धिक ईमानदारी औरमनुष्य रूप को विकसित करने वाले समस्त नैतिक आदर्शों को बहुत अधिक मूल्य देती है. इसप्रकार यहतो माना जाता है कि मनुष्य की मनुष्यता अपूर्व संभावनाओं से भरी है. वहसबप्रकार के नैतिक औरआध्यात्मिक विकास का साधन है, उसकी महिमा अपार है.

(ख) साधारण, रोजमर्रा की घटनाओं के महीन सूत्रों द्वारा कुछ गंभीर सत्यों को उद्घाटित करना, उनके माध्यम से पत्रों की आकांक्षाओं औरअसंगतियों को अभिव्यक्त करना सचमुच एककठिन समस्या है. हमेशा यहखतरा बना रहता है कि कहीं लेखक अपनी निरपेक्ष दृष्टि से च्युत होकर एकस्थूल, इतिवृतात्मक दृष्टिकोण न अपना ले. यह केवल हवाई खतरा नहीं है. पिछले वर्षों में हिंदी उपन्यास का दुर्भाग्य ही यह रहा है कि लेखक अपने को सोशिलाजिस्ट पहले समझता है – कलाकार बाद में. फिर चाहे उपर्युक्त दृष्टिकोण प्रछन्न रूप में मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्वों द्वारा प्रदर्शित हो. (नदी के द्वीप) या सामाजिक विषमताओं के सम्बन्ध में लंबी सैद्धांतिक बहसों के रूप में (बूंद औरसमुद्र, जयवर्धन) यहएकअजीब काम्प्लेक्स है जिससे न्यूनाधिक मात्रा में हर लेखक पीड़ित दिखाई पड़ता है. यथार्थ के प्रति यहविकृत, विक्टोरियन दृष्टिकोण अधिकांश उपन्यासकारों के कलात्मक व्यक्तित्व को कुंठित-सा करदेता है. बाहरी नियंत्रण (एक्सटर्नल रेजिमेंटेशन) का विरोध किया जा सकता है, क्योंकि हमउसके प्रति सजगहैं, किन्तु यथार्थ के प्रति यहसैद्धांतिक दृष्टिकोण एकअंदरूनी विकार (इनररेजिमेंटेशन) उत्पन्न करता है, जो स्थूल रूप से दिखाई नहीं देता, इसलिए औरभी घातक है.

अथवा

जीवन के यथार्थ के इसअन्वेषण की एकअन्य अनिवार्य परिणति हुई व्यक्ति औरपरिवेश के सम्बन्ध सूत्रों की खोज औरपरख जो कमोबेश मात्रा में बहुत से उपन्यासों से मिलती है, यद्यपि वहखोज सदा सार्थक औरसफल हुई है, यह नहीं कहा जा सकता. परिवेश को समझने का यहआग्रह कईप्रकार से से प्रकट हुआ है औरकुछ उपन्यासों में छोटे बालकों के अपने परिवार तथा अन्य तात्कालिक परिवेश के साथ तीखे संघात को प्रस्तुत करके किया गया है, जो कभी-कभी काव्यात्मकता के स्तर तकउठजाता है. ऐसी काव्यात्मकता आत्मान्वेषण के स्तर पर जीवन के सत्य से साक्षात्कार करने वाले कुछेक उपन्यासों में है, जहाँ व्यक्तिगत तथा निजी अनुभूतियों की गाथा ही अपनी मूल भाववस्तु की तीव्रता, एकाग्रता औरसघनता के कारण यहआयाम प्राप्त करती है. व्यक्ति औरपरिवेश के संबंधों की खोज को कुछेक उपन्यासों में घर औरबाहर की, व्यक्तिगत आदर्श, बल्कि व्यक्तिगत नैतिकता औरसामाजिक दायित्व की समस्या के अन्वेषण के रूप में प्रस्तुत किया गया है. व्यक्ति की चरमउपलब्धि औरसार्थकता क्या सामाजिक दायित्व में अपने व्यक्तित्व को डूबोकर प्राप्त हो सकती है ? क्या व्यक्तित्व का परित्याग ही व्यक्ति की सार्थकता है ?

(ग) तो प्रयोग अपने आपमें इष्ट नहीं है, वहसाधन है औरदोहरा साधन है. क्योंकि एकतो वहउससत्य को जानने का साधन है जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे उसप्रेषण की क्रिया को औरउसके साधनों को जानने का भी साधन

है. अर्थात प्रयोग द्वारा कवि अपने सत्य को अधिक अच्छी तरह जान सकता है और अधिक अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकता है. वस्तु और शिल्प दोनों के क्षेत्र में प्रयोग फलप्रद होता है. यह इतनी सरल और सीधी बात है कि इससे इनकार करना चाहना कोरा दुराग्रह है; ऐसे दुराग्रही अनेक हैं और उस वर्ग में हैं जो साहित्य शिक्षण का दायित्व लिए है, इससे हमें आतंकित न होना चाहिए.

अथवा

इस तरह की जड़ीभूत सौन्दर्यानुभूति के फलस्वरूप ही, कुछ साहित्यिक समाजशास्त्री अपने ढर्रे के बहार के क्षेत्र में प्रचलित नयी काव्य समृद्धि में विद्रूपता के अतिरिक्त कुछ नहीं देखते. यदि हमें वैविध्यपूर्ण, परस्पर द्वन्द्वमय, मानव जीवन के (अपने अंतर में व्यापित) मार्मिक पक्षों का वास्तविक प्रभावशाली चित्रण करना है, तो हमें जड़ीभूत सौन्दर्याभिरूचि और उसके सेंसर त्यागने होंगे, तथा अनवरत रूप से अपने ढांचे और फ्रेमों में संशोधन करते रहना होगा. मनुष्य जीवन का कोई अंग ऐसा नहीं है जो साहित्याभिव्यक्ति के अनुपयुक्त हो. जड़ीभूत सौन्दर्याभिरुचि एक विशेष शैली को दूसरी विशेष शैली के विरुद्ध स्थापित करती है. गीतों का नयी कविता से कोई विरोध नहीं है, न नयी कविता को उसके विरुद्ध अपने को प्रतिस्थापित करना चाहिए. आवश्यकता इस बात की है कि जीवन में नए तत्व आयें, न कि (किसी) काव्य शैली की धारा की समाप्ति हो.

2. हिदी आलोचना के विकास में द्विवेदी युग के योगदान का वर्णन करें. (15)

अथवा

'साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक निबंध के आधार पर प्रेमचंद की साहित्यिक दृष्टि का विश्लेषण करें.

3. मनोवैज्ञानिक आलोचना के विकास में डॉ नगेन्द्र की भूमिका को स्पष्ट करें. (15)

अथवा

रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि का मूल्यांकन करें.

4. शुक्लोत्तर आलोचना की वृहद्त्रयी पर एक सारगर्भित निबंध लिखें. (15)

अथवा

नामवर सिंह की आलोचना की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख करें.